ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

मन्नू भंडारी और ममता कालिया की कहानियों में नारी जागरण

Vijendra Prasad Meena

Assistant Professor, Dept. of Hindi, SPNKS Government PG College, Dausa, Rajasthan, India

सार

मन्नू भंडारी (३ अप्रैल १९३१ — १५ नवंबर २०२१) हिन्दी की सुप्रसिद्ध कहानीकार थीं। मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में जन्मी मन्नू का बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। लेखन के लिए उन्होंने मन्नू नाम का चुनाव किया। उन्होंने एम ए तक शिक्षा पाई और वर्षों तक दिल्ली के मिरांडा हाउस में अध्यापिका रहीं। धर्मयुग में धारावाहिक रूप से प्रकाशित उपन्यास आपका बंटी से लोकप्रियता प्राप्त करने वाली मन्नू भंडारी विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचंद सृजनपीठ की अध्यक्षा भी रहीं। लेखन का संस्कार उन्हें विरासत में मिला। उनके पिता सुख सम्पतराय भी जाने माने लेखक थे। ममता कालिया (02 नवम्बर,1940) एक प्रमुख भारतीय लेखिका हैं। वे कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, कविता और पत्रकारिता अर्थात साहित्य की लगभग सभी विधाओं में हस्तक्षेप रखती हैं। हिन्दी कहानी के परिदृश्य पर उनकी उपस्थिति सातवें दशक से निरन्तर बनी हुई है। लगभग आधी सदी के काल खण्ड में उन्होंने 200 से अधिक कहानियों की रचना की है।वर्तमान में वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका "हिन्दी" की संपादिका हैं। आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं : 'बेघर', 'नरक-दर-नरक', 'दौड़', 'दुक्खम सुक्खम', 'सपनों की होम डिलिवरी', 'कल्चर-वल्चर' (उपन्यास); 'छुटकारा', 'उसका यौवन', 'मुखौटा', 'जाँच अभी जारी है', 'सीट नम्बर छह', 'निर्मोही', 'प्रतिदिन', 'थोड़ा-सा प्रगतिशील', 'एक अदद औरत', 'बोलनेवाली औरत', 'पच्चीस साल की लड़की', 'ख़ुशक़िस्मत', दो खंडों में अब तक की सम्पूर्ण कहानियाँ 'ममता कालिया की कहानियाँ' (कहानी-संग्रह); 'A Tribute to Papa and other Poems', 'Poems '78', 'खाँटी घरेलू औरत', 'कितने प्रश्न करूँ', 'पचास कविताएँ' (कविता-संग्रह); 'आप न बदलेंगे' (एकांकी-संग्रह); 'कल परसों के बरसों', 'सफ़र में हमसफ़र', 'कितने शहरों में कितनी बार', 'अन्दाज़-ए-बयाँ उर्फ़ रवि कथा' (संस्मरण); 'भविष्य का स्त्री-विमर्श', 'स्त्री-विमर्श का यथार्थ', 'स्त्री-विमर्श के तेवर' (स्त्री-विमर्श); 'महिला लेखन के सौ वर्ष' (सम्पादन)।

आप 'व्यास सम्मान', 'साहित्य भूषण सम्मान', 'यशपाल स्मृति सम्मान', 'महादेवी स्मृति पुरस्कार', 'राममनोहर लोहिया सम्मान', 'कमलेश्वर स्मृति सम्मान', 'सावित्री बाई फुले स्मृति सम्मान', 'अमृत सम्मान', 'लमही सम्मान', 'सीता पुरस्कार' ढींगरा फैमिली फ़ाउंडेशन, अमेरिका का 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड', 'ओ.पी. मालवीय स्मृति सम्मान' से सम्मानित की जा चुकी हैं।

परिचय

मन्नू जी ने कहानियों में मनोविश्लेषणात्मक चित्रण अत्यंत सहजता व सूक्ष्मता से किया है। मैं हार गई :-1957 में प्रकाशित प्रथम कहानी संग्रह है ।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

मैं हार गई कहानी "कहानी" पत्रिका में प्रकाशित हुई थी । मन्नू भंडारी की सर्वप्रथम कहानी 1954 में "नया समाज "पत्रिका में प्रकाशित हुई थी किंतु दूसरी कहानी 'मैं हार गई' से इन्हें सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई।मैं हार गई:- नारी मन की अनुभूतियां इस कहानी में अभिव्यक्त हुई है । मैं हार गई कहानी संग्रह में 12 कहानियां है । [1,2] उनके लेखन और व्यवहार में कोई फाँक नहीं है. 90 वर्ष की उम्र में उनके निधन के बाद समूचा साहित्य जगत और उनका बड़ा पाठक वर्ग शोक में डूब गया है. वो लंबे समय से बीमार चल रही थीं और उनका लेखन भी लगभग छूट चुका था. फिर भी वे हमेशा स्त्री लेखन की मज़बूत कड़ी बनी रहीं.उनके निधन से साहित्य जगत में जो शून्य आया है, उसकी भरपाई असंभव है. वे उस दौर में लेखन कर रही थीं, जब स्त्रियाँ कम लिख रही थीं. उनकी संख्या उँगलियों पर गिनी जा सकती है.

उस समय भारतीय समाज संक्रमण काल से गुजर रहा था. मध्यवर्गीय परिवारों में विखंडन शुरू हो चुका था और स्त्रियाँ अपनी अस्मिता को लेकर मुखर हो रही थीं. मन्नू जी ऐसे दौर में एक सुधारवादी नज़रिया लेकर कथा जगत में आती हैं. उसी दौर में स्त्रियाँ घरों से बाहर निकलीं और कामकाज़ी बनीं. उनका जीवन बदला और सोच भी बदली. इस यथार्थ और बदलाव को मन्नू जी कई कोणों से देख-समझ रही थीं. उन्होंने कामकाज़ी महिलाओं के जीवन-प्रसंगों, उनकी समस्याओं को केंद्र में रखकर कई कहानियाँ लिखीं. सादा शिल्प, परिवेश पर पैनी निगाह और कथ्य की सहजता उन्हें हरेक दौर में प्रासंगिक बनाती रहीं. मन्नू भंडारी इस मायने में हिंदी की प्रारंभिक कहानीकार मानी जाएंगी कि वह पुरुष के उत्पीड़न की शिकार स्त्री की बेबसी को चित्रित करने की जगह, ऐसी स्त्री को परिदृश्य पर लेकर आईं जो तमाम नेकनीयती और सदाशयता के बावजूद अपने ही अंतर्विरोधों और कपटपूर्ण आचरण से अपने चारों ओर मकड़जाल बुनने लगती है."[3,4]

ममता कालिया ने कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, संस्मरण और पत्रकारिता अर्थात् साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी कलम का जादू बिखेरा।

उन्होंने अपने लेखन में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा। अपनी रचनाओं में वह न केवल महिलाओं से जुड़े सवाल उठाती हैं, बल्कि उन्होंने उनके उत्तर देने की भी कोशिश की हैं। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में हाडमाँस की स्त्री का चेहरा दिखाया। जीवन की जटिलताओं के बीच जी रहे उनके पात्र एक निर्भय और श्रेष्ठतर सुलूक की माँग करते हैं जहाँ आक्रोश और भावुकता की जगह सत्य और संतुलन का आग्रह है। ममता कालिया ने अपने लेखन में रोज़मर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

व्यक्तित्व उभारा और अपनी रचनाओं में रेखांकित किया कि स्त्री और पुरुष का संघर्ष अलग नहीं, कमतर भी नहीं वरन् समाजशास्त्रीय अर्थों में ज़्यादा विकट और महत्तर है।

आजकल का विवाह लाभ और नुकसान पर आधारित है। पाश्चात्य शैली ने भारतीय संस्कृति पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है। जिसके कारण आजकल दाम्पत्य और विवाह अनिवार्य नहीं रहा। और शारीरिक भूख को मिटाने का एक मात्र साधन भी अब विवाह नहीं रहा। अतः आज हमारे समाज में दाम्पत्य जीवन विघटित होता जा रहा हैं।[5,6]

ममता कालिया ने अपने साहित्य में दाम्पत्य जीवन की अनेक समस्याओं को उठाया है। लेखिका की अनेक कहानियाँ विवाह संस्था के प्रश्न को अंकित करती है। लेखिका इस संबंध की पवित्रता को अक्षण रखने का संकेत देती है तो कहीं आदिम सुख प्राप्ति के विवाहेतर संबंध का समर्थन करती दिखई देती है।

भारतीय दाम्पत्य जीवन का कठोर सत्य यह भी है कि यहाँ अपना साथी चुनने का अधिकार केवल पुरूष को है स्त्री को नहीं। स्त्री तो उसकी पत्नी रूप में अपने अतीत को भुलाकर अपने व्यक्तित्व को परिवार के अनुरूप ढाल लेती है। जो स्त्री समर्पण करना सिख लेती है वहीं भारतीय दाम्पत्य जीवन का आदर्श है।

पति - पत्नी का सम्बंध सभी संबंधो का प्रमुख स्त्रोत होता हैं। जिस प्रकार एक वृक्ष का आधार तना होता है वहीं से शाखाएं उपशाखाएं निकक्ष कर एक पूर्ण वृक्ष का निर्माण करती है उसी प्रकार सभी संबंधो का आधार पति - पत्नी का संबंध होता है। जिससे आगे निकल कर सभी संबंध बनते है और परिवार , समाज , राष्ट्र , संसार का निर्माण करते है। हर संबंध की धाराएं पति - पत्नी का संबंध बनते है और परिवार , समाज , राष्ट्र , संसार का निर्माण करते है। हर संबंध की धाराएं पति - पत्नी के संबंध पर आकर मिलती है। पति - पत्नी का संबंध प्रेम वर आधारित होता है।[7,8]

अस्मिता स्वतंत्रता और सामाजिकता इन तीनों शब्दों की धुरी पर स्त्री - पुरूष का सारा संघर्ष केंद्रित है। इनसे प्रभावित होकर जब स्त्री अपने अस्तित्व को सुरक्षित करना चाहती है लेकिन पुरूष स्त्री की इस चेष्टा से घबरा जाता है। और उसको अपना अस्तित्व खतरे में लगता है। वह स्त्री को हमेशा अपने से एक दर्जा नीचे रखना चाहता है। यथा - " कविता के बौद्धिक विकास से संदीप आशंकित रहता है , ' मानो यह विकास ही एक दिन उसके संबंधो का विनाश करेगा। " [1]

संदीप कविता को हमेशा अपने से पीछे रखना चाहता था लेकिन कविता कदम से कदम मिलाकर चलने में विश्वास रखती थी। जब पुरूष अपने पौरूष के अहं में डूब जाता है तो उसे स्त्री के अस्तित्व से भी खतरा लगने लगता है।

चद्रकांता का मत है कि " ममता कालिया का उपन्यास एक पत्नी के नोट्स दांपत्य संबंधो का पुनर्परीक्षण करता एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि क्या पति - पत्नी का संबंध मात्र सैक्स पर ही आधारित है ? देह का आकर्षण समाप्त होते ही क्या विवाह से प्रेम गायब हो जाएगा ? पुरूष की सौंदर्य लिप्सा को संतुष्ट करने के लिए स्त्री शरीर की सजावट करने और पति को रिझाने - दुलारने में ही अपनी सम्पूर्ण शक्ति और मेघा का हवन करती रहेगी ? ताकि उसका पति हर सुदंर स्त्री के पीछे भागना छोड़ दे। क्या आपसी समझ और आत्मीयता दांपत्य का आधार नहीं हो सकते। " [2]

' बेघर ' ममता कालिया का पहला उपन्यास और उनकी दूसरी पुस्तक है जिसमें जीवन की विडम्बनाओं के कारण पारिवारिक विघटन की गाया है।

शिक्षा और माहौल की वजह से रमा और परमजीव के सामाजिक सरोकारों का टकराव है। विवाह के बाद एक स्त्री के लिए लगभग सभी चीजें बदल जाती है। एक तो गृहस्थी का बोझ और दूसरा पुरूष दमन उसे बौना बना देता है।

' उमस ' कहानी में पति - पत्नी हम उम्र थे उनके ख्याल एक दूसरे से मिलते थे और उनका पेशा भी एक ही था। परन्तु विवाह के बाद पत्नि के व्यक्तित्व पर धूल छा गई और इस मानसिक उमस से मुक्ति सिर्फ मौत ही दे सकती है।

' रजत जयंती ' कहानी में लेखिका बड़े ही प्रभावपूर्ण दंग से यह प्रस्तुत करती है कि जो दांपत्य जीवन है अगर उसमें सामंजस्य नहीं , प्रेम व विश्वास नही है तो पति - पत्नी का संबंध जिसे आत्मा का संबंध माना जाता है वह बोझ बन जाता है। और मनुष्य उसे जीवन भर जीने की बजाय ढोता रहता है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

लेखिका द्वारा लिखित ऐसी कहानियां (उमस, इरादा) है जिनमें नायिकाएं दम घोटू वातावरण से मुक्ति पाना चाहती है।

'नरक दर नरक' उपन्यास में भी कुछ ऐसे ही आत्मीय संबंधो में विघटन के हादसे होते रहते है। इस उपन्यास में स्त्री की स्वतंत्रता की चाहत और विवशता भी अभिव्यक्त हुई है। आज पूरी दुनिया का संचालन अर्थ से होता है। धन के अभाव के कारण भी दाम्पत्य जीवन में परेशानिया खड़ी हो जाती है। क्योकि धन की कमी से व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता। इसका चित्रण ममता कालिया द्वारा रचित 'नरक दर नरक' उपन्यास में किया गया है। आर्थिक तंगी के कारण ही जगन और उषा में मनमुटाव रहने लगता है। जगन को जब भी कोई परेशानी होती है या कोई दुख होता है तो उषा हमेशा उसके दुख में शामिल होती है परंतु जगन कोई न कोई बात पिन की तरह उसे चुभो देता है जगन कहने लगता है-" अब तो घर भी कॉलेज होता जा रहा हैं। शुक्र है तुम्हारे लिये अभी कॉलेज ही बना है मेरे लिए तो यह वामशक्कत सी क्लास कैद है। [3]

उषा अपने वैवाहिक जीवन की दिनचर्या से बहुत परंशान है इस दिनचर्चा से उसका जीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है।[9,10]

'पीली लड़की' कहानी में एक बेबस कमजोर लड़की की भावनाओ को उजागर किया है। सोना एक कमजोर लड़की है जो विवाह के नाम से भी डरती है और उसका यह डर विवाह के बाद भी बना रहता है इस डर के कारण वह अपने पति के साथ सामान्य रूप से नहीं रह पाती।

जिससे धीरे-धीरे उनके संबंधो में दूरी आ जाती है। सैक्स भावना का डर उसे पति के साथ उसे सामान्य नहीं रहने देता अतः पति-पत्नी में सामंजस्य नहीं बैठ पाता जो उनकी दूरी का कारण बनता है।

'उपलब्धि- कहानी में भी दाम्पत्य जीवन के विघटन को दर्शाया गया है। 'अपत्नी' उसी शहर में 'पिछले दिनों का अंधेरा' 'शहर-शहर की बात' आदि कहानियाँ असफल दाम्पत्य जीवन को उजागर करती है।

इसी प्रकार ममता कालिया की एक ओर कहानी है 'मनोविज्ञान' जो पति की मानसिकता पर आधारित है। इस कहानी में पुरूष अपनी पत्नी के व्यक्तित्व को स्वीकार नहीं कर पाता। यह पत्नी की त्रासदी का मूल कारण है। आधुनिकता को बढावा देने और पत्नी द्वारा। उसे पूर्णतः व्यव्हार करने की स्थिति को पति सहन नहीं कर पाता। यह पत्नी उसके सामने आत्म समर्पण कर देती है लेकिन उस पुरूष की मानसिकता उसके आत्म समर्पण को स्वीकार नहीं कर पाती। अंत में दोनों एक निश्चित दूरी का अनुभव करते हुए अलग हो जाते है।[11,12]

दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी के बेमेल विवाह के कारण भी समस्याएं उत्पन्न होती है। ममता कालिया की 'राएवाली' इसी प्रकार की कहानी है। इस कहानी में राया की कालिन्दी है जिसकी शादी मथुरा के मोहन से होती है। शादी होते ही मथुरा वालों को अपनी गुरूता और राया की लघुता का बोध होने लगता है। पति मोहन को अपनी पत्नी से शिकायत है कि वह फालतू बोलती है। परिवार के बुर्जुग को चिंता है कि राए की कालिदी मथुरा के मोहन को कैसे सम्भालेगी। कुछ समय बाद मोहन के भाई का विवाह होता है और उसी समय कालिंदी जाने की जिद्द करती है जिस पर उसका पति उसे कहता है- "सोच लो यह घर या वह घर। इस मौके पर चली गयी तो वापस घूसने नहीं दूंगा, पड़ी रहना सारी उमर बाद के द्वारे।" [4]

इस प्रकार बेमेल वातावरण में मोहन और कालिन्दी में विषमता आ जाती है।

'प्रेम कहानी' ममता कालिया का सुप्रसिद्ध उपन्यास है जिसमें बेमेल विवाह की व्यथा का बड़ा ही सजीव चित्रण किया गया है। इसका ताना बाना माँ-बाप के मना करने के बावजूद विवाह और उसके बाद दाम्पत्य जीवन में जो तनाव आते है उसके अनुभव के आधार पर बुना गया है जया और यशा कहानी के दो समानन्तर बिन्दु है। एक ने माँ-बाप के विरोध के बावजूद अपने प्रेमी को पा लिया है और दूसरी ने परम्पराओं से विवश होकर उसे खो दिया है। यह एक पठनीय उपन्यास है जिसमें दाम्पत्य जीवन में सामाजिक कारणों से आये तनाव को उजागर किया है।

'जितना तुम्हारा हूँ। कहानी में दर्शाया गया है कि दाम्पत्य जीवन में यदि प्रेम का अभाव होता है तो दाम्पत्य जीवन बेजान हो जाता है और जीवन पारिवारिक उलझनों और वास्तविकताओं के आगे ठण्डा पड़ जाता है। प्रेम में भावनाएं जड़ हो जाती है। [13,14] पारिवारिक कारणों में पति-पत्नी के बीच में

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

तनाव उत्पन्न हो जाता है जिससे उनका दाम्पत्य जीवन बहुत अधिक प्रभावित होता है। और जिससे दाम्पत्य जीवन में विघटन होना स्वाभाविक है।

'मनहूसाबी' कहानी में दर्शाया गया है कि किस तरह से बेमेल विवाह से संबंधो का ह्रास होता है व्यक्ति आदर्शवाद में फंस कर विवाह तो कर लेता है लेकिन उसको अच्छे से निभा नहीं पाता।

'मुहब्बत से खिलाइए' कहानी में पति अपनी पत्नी को अपमानित करके मेजबान को खुश करता है। यह स्थिति अक्सर समाज में देखी जाती है। जहाँ स्त्री को अपमानित किया जाता है। इसी तरह दर्पण कहानी में भी वाणी का पति अपनी पत्नी को हमेशा अपने से नीचे रखना चाहता है वह अपना प्रभुत्व कायम रखना चाहता है वह नारियों की स्वतंत्रता से चिड़ता है। इसलिए उसे नारी के ज्यादा बोलने से निडरता और उसकी सक्रियता से चिढ़ होती है क्योकि उसे फिजूलखर्ची से नफरत है आधा जीवन उसने कभी मुस्कराने की भी जरूरत नहीं समझी थी। बानी की हर जरूरत, बच्चों की हर फरमाइश को अब तक घुड़कियों से पूरा किया था। [5]

'बेघर' उपान्यास पति-पत्नी के शारीरिक सम्बधों पर केंद्रित है। इस उपन्यास में पति को आदर्शवादी और दूसरों पर शक करने वाला दिखाया गया है। इस उपन्यास में परमजीत को एक शकी व्यक्ति के रूप करता है। लेकिन परमजीत का जीवन शंका से घिर जाता है वह संजीवनी पर शक करता है और पुरूष था। इसी शंका में घिर कर वह संजीवनी से दूरियां बना लेता है और एक रमा नाम की लड़की से शादी कर लेता है। रमा एक फूहड़ और कंजूस लड़की है। वे दोनों दाम्पत्य जीवन में सदा खालीपन रहा है। रमा और परमजीत के विचार कभी एक-दूसरे से नहीं मिल पाए। उनकी रूचिया भी अलग-अलग है जिससे उनके जीवन में प्रेम नहीं है। इन विभिन्नताओं की वजह से परमजीत का जीवन विषाक्त हो गया है वह अपने इस जीवन से खुश नहीं है। ममता कालिया ने 'बेघर' उपन्यास के माध्यम से समाज में व्याप्त उन रूढ़ियों पर चोट की है जो स्त्री के कौमार्य को लेकर फैली हुई है। ये रूढियां अमानवीय और अवैज्ञानिक है।

'नरक-दर-नरक' में लेखिका ने यह दर्शाने की कोशिश की है कि किस तरह एक पति-पत्नी अपना गृहस्थ जीवन को सही ढ़ग से जीने के लिए समाज में व्याप्त बेकारी, क्षोभ, कुंठा का सामना करना पड़ता है। बाहरी वातावरण से पति-पत्नी का जीवन प्रभावित होता है। इस उपन्यास में दर्शाया गया है कि किस तरह भारतीय समाज में एक मध्यम वर्गीय परिवार को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अस उपन्यास में नरक को बहुत सारे स्तरो पर चित्रित किया गया है जैसे बेरोजगारी और काम की तलाश में इधर-उधर भटकना। जो लोग मौका परस्त है उनके सामने एक साधारण व्यक्ति किस तरह हारता चला जाता है। जो लोग सच्ची निष्ठा से अपना काम करते है और जीविका कताने के लिए घर से दूर रहते है अकसर ऐसे लोगों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ता है। जो काम करती है और बच्चों को सम्भातती है। वह अपने इस दोहरे उत्तरदायित्व से टूट जाती है। ऐसी अनेक मध्यन वर्गीय समस्याएं है। जिनका चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।

इस उपन्यास में एक मध्यवर्गीय नया विवाहित जोड़ा जगन और उषा को दर्शाया को दर्शाया है कि किस तरह वे दोनो बंबई की व्यस्त जिंदगी में जीवन की मूलभूत जरूरतों से वंचित रहते है। जगन अच्छी नौकरी की तलाश में भटकता रहता है और उषा घर के कार्यो में व्यस्त रहती है। जगन नौकरी करता है लेकिन उसे वहाँ से भी जवाब मिल जाता है। इन सब से परेशान होकर जगन बंबई को छोड़ना चाहता है और वापस इलाहबाद जाना चाहता है। लेकिन वापसी कैसे करे। क्योकि एक बार माला का धागा टूट जाए तो उसे दोबारा जोड़ने से उसमें गांठ पड़ जाती है। वही गांठ इस उपन्यास की त्रासदी है। इस उपन्यास में दर्शाया गया है। कि पति-पत्नी के संबंधो में कटुता आना, उनके बीच अलगाव पैदा होना और उनके संबंधो में खाई उत्पन्न होना इन सबका कारण उनकी आर्थिक स्थिति है। इस उपन्यास से जुडती एक उपकथा भी है। परन्तु विनय बहुत अधिक शकी व्यक्ति है। वह अपनी पत्नी के एक-एक मिनट का हिसाब रखता है। अगर उसकी पत्नी को स्कूल से घर आने में जरा सी भी देर हो जाती है तो वह उस पर शक करता है। वह अपनी पत्नी को मानसिक यातनाएं देता है। जिस प्रकार जगन अपने व्यवसाय में डूबकर अपनी पत्नी को भूलता जा रहा है ठीक उसी प्रकार सीता अपनी नौकरी और गृहस्थी के बोझ तले दबकर अपने पति से दूर हो रही है। दोनों की अपने-अपने नरक-नरक है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

लेखिका ने अपनी कहानियों व उपन्यासों के द्वारा दर्शाया है कि पति - पत्नी के बीच में खालीपन होने के बाद भी बड़ी आसानी से बाहरी दुनिया को सुखी होने का नाटक दिखाते है। पति - पत्नी एक - दूसरे की भावनाओ को समझने की कोशिश नही करते।
दोनों अपने - अपने कार्यो में व्यस्त रहते है। इन्होने बताय है कि किस तरह पति - पन्नी के संबंधो में ह्रास का कारण बेमेल विवाह है।[13]

विचार-विमर्श

मन्नू भंडारी सिर्फ हिंदी साहित्य की नहीं, पूरे समाज की अभिभावक दिखती हैं। वह अपने लेखन से प्यारी सी थपकी देते हुए समाज को हर मौके पर टोकती चलती हैं। कभी पुरुषवादी सोच पर गंभीर चोट करती हैं तो कभी बालमन के मनोविज्ञान को गहरे तक छू लेती हैं। मन्नू भंडारी के जाने से हिंदी साहित्य जगत में एक ऐसा खालीपन पैदा हो गया है, जो हमेशा बना रहेगा।

मन्नू भंडारी का साहित्य जगत में प्रमुख योगदान कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में रहा। उनकी वस्तुनिष्ठता और नाटकीयता का दृढ़ निश्चय ही उनकी प्रमुख शैली रही। उनका जन्म 3 अप्रैल 1931 को मध्य प्रदेश के मंदसौर में हुआ। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाती रहीं और रचना क्षेत्र में भी बराबर सक्रिय बनी रहीं।

आजादी के बाद के लेखन में जब कहानी का एक अलग तरह का दौर चला तो उसे नाम मिला 'नई कहानी'। इस दौरान कहानी लेखन के शिल्प में कई बड़े बदलाव आए। मन्नू भंडारी की बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने इस बदलते परिवेश में खुद को स्त्री मनोभावों की लेखिका के रूप में स्थापित किया। स्त्री लेखन में तीन प्रमुख स्तंभ कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा और मन्नू भंडारी में से मन्नू भंडारी सबसे प्रमुख स्तंभ बनकर उभरीं। उस दौरान उभरते मध्य वर्ग के गुस्से और संघर्ष की झलक उनकी रचनाओं में दिखती है। आजादी के बाद लोगों में पैदा हुई इच्छाओं और आशाओं पर भी जमकर लिखा। उन्होंने महानगरीय जीवन में स्त्रियों की दशा के भी कई चित्र खींचे। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है उनकी कहानी 'यही सच है'। यह उस वक्त के लिए एक नई स्त्री की आवाज थी। उनकी इस कहानी पर आधारित फिल्म रजनीगंधा बेहद चर्चित रही।

मन्नू भंडारी आम जीवन में जितनी सरल दिखती थीं, उनका लेखन इसके उलट उतना ही तल्ख है। उन्होंने मध्य वर्ग के जीवन को बेहद करीब से महसूस किया और उसे अपने रचना संसार में सधे अंदाज में शामिल कर लिया। उनके लेखन में कहीं कोई शोरगुल नहीं है। वह बेहद सलीके से अपनी बात कह देती हैं। उनके रचना संसार की सबसे बड़ी खूबी यही है कि वह कठिन से कठिन बात कहने के लिए भी कठिन भाषा का सहारा नहीं लेतीं।

उन्हें निजी जीवन में एकसाथ कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। वह इस पुरुषवादी समाज में हर संघर्ष का डटकर सामना करती रहीं। उनकी कहानियों में महिलाओं के खातिर लड़ी लड़ाई से उपजी जीत बार-बार चमकती है। वह इसे अपनी हर अगली रचना में लगातार दर्ज करती चलती हैं।

उन्होंने चर्चित साहित्यकार राजेंद्र यादव से विवाह किया। लेकिन, वह राजेंद्र यादव की छाया में कहीं भी छोटी पड़ती नहीं दिखीं। उनके साहित्य ने खुद अपनी अलग पहचान बनाई। यह विवाह कुछ दशकों तक चलकर टूट गया। मन्नू भंडारी जब राजेंद्र यादव से अलग हुईं तो इससे पैदा हुई पीड़ा ने उन्हें हिलाकर रख दिया। उन्होंने महसूस किया कि एक विवाहित युगल का अलग होना सिर्फ एक महिला या एक पुरुष के हिस्से की त्रासदी नहीं है, बल्कि उस बच्चे के जीवन पर आई गंभीर त्रासदी भी है, जिसके माता-पिता अलग हो गए। जब उन्होंने बच्चे की घुटन को रचना का रूप दिया तो यह कालजयी उपन्यास 'आपका बंटी' बन गया। इस उपन्यास का हिंदी साहित्य जगत में कद कितना बड़ा है, इसका अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि इसका जिक्र किए बिना बीसवीं सदी के हिंदी उपन्यास जगत की चर्चा अधूरी रह जाएगी। यह उपन्यास बालमन के प्रति उनकी गहरी संवेदना को भी दर्शाता है। वह अपने ऊपर बीत रही त्रासदी से बड़ी पीड़ा बच्चे के मन में पैदा हुई घुटन को मानती हैं और बताती हैं कि टूटते परवारों के बीच बच्चे किस यातना से गुजरते हैं। साल 1970 में लिखा गया यह उपन्यास बीतते समय के साथ अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है।

'महाभोज' उपन्यास में मन्नू भंडारी अफसरशाही में फैले भ्रष्टाचार को बेहद बारीक ढंग से सामने रखती हैं। वह इस उपन्यास के जरिए बताती हैं कि भ्रष्ट तंत्र के सामने लाचार आम आदमी किस तकलीफ से गुजरता है। यह उपन्यास स्वतंत्रता संग्राम के ऊंचे आदर्शों, त्याग और जनसेवा की विदाई की कथा है। मन्नू भंडारी ने राजनीति के बदलते मुहावरों को सामने रख दिया 'महाभोज' में। जिन दिनों यह उपन्यास आया, उस समय हिंदी साहित्य में दलितों के मुद्दों पर शायद ही कोई बात होती थी। लेकिन मन्नू भंडारी ने

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

दलितों के शोषण का जो चित्र महाभोज में खींचा, उसने हिंदी समाज को मथ डाला। दलित राजनीति के शोर में जमीनी हकीकत को समझने की जब भी कोशिश होगी, 'महाभोज' प्रतिरोधी स्वर के एक दस्तावेज के रूप में याद किया जाता रहेगा।[14]

परिणाम

इस सदी के सातवें दशक में जहाँ ममता कालिया ने लेखन आरंभ किया, कथा-कहानी में तब स्त्री की एक भीनी-भीनी छवि स्वीकृति और समर्थन के सुरक्षा-चक्र में दिखाई देती थी। व्यावसायिक पत्र-पत्रिकाएँ इस यथास्थितिवाद को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थीं।

ममता कालिया ने अपने लेखन में रोज़मर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा और अपनी रचनाओं में रेखांकित किया कि स्त्री और पुरुष का संघर्ष अलग नहीं, कमतर भी नहीं वरन समाजशास्त्रीय अर्थों में ज़्यादा विकट और महत्तर है।

२ नवंबर १९४० को वृंदावन में जन्मी ममता की शिक्षा दिल्ली, मुंबई, पुणे, नागपुर और इन्दौर शहरों में हुई। उनके पिता स्व श्री विद्याभूषण अग्रवाल पहले अध्यापन में और बाद में आकाशवाणी में कार्यरत रहे। वे हिंदी और अंग्रेजी साहित्य के विद्वान थे और अपनी बेबाकबयानी के लिए जाने जाते थे। ममता पर पिता के व्यक्त्वि की छाप साफ दिखाई देती है।

'प्यार शब्द घिसते घिसते चपटा हो गया है अब हमारी समझ में सहवास आता है' जैसी साहसी कविताओं से लेखन आरंभ कर ममता ने अपनी सामर्थ्य और मौलिकता का परिचय दिया और जल्द ही कथा-साहित्य की ओर मुड गईं। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में हाडमाँस की स्त्री का चेहरा दिखाया। जीवन की जटिलताओं के बीच जी रहे उनके पात्र एक निर्भय और श्रेष्ठतर सुलूक की माँग करते हैं जहाँ आक्रोश और भावुकता की जगह सत्य और संतुलन का आग्रह है।

ममता कालिया पिछले तैंतीस वर्षो से अध्यापन से जुड़ी रही हैं और संप्रति महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज इलाहाबाद में प्राचार्या हैं। वे प्रख्यात रचनाकार श्री रवीन्द्र कालिया की पत्नी हैं और उनके दो बेटे हैं अनिरुद्ध और प्रबुद्ध।

ममता कालिया की रचनाओं में उनके कहानी संग्रह 'छुटकारा', 'उसका यौवन', 'जाँच अभी जारी है', 'प्रतिदिन' और 'चर्चित कहानियाँ' उल्लेखनीय हैं। उनके प्रमुख उपन्यास हैं-'बेघर', 'नरक दर नरक', 'प्रेम कहानी' और 'एक पत्नी के नोट्स।' आजकल उनका लघु उपन्यास 'दौड' ('तद्भव' में प्रकाशित) चर्चा के केंद्र में है। ममता को इससे पहले 'कहानी' पत्रिका (सरस्वती प्रेस) सम्मान, उ० प्र० हिंदी संस्थान का यशपाल सम्मान तथा अभिनव-भारती (कलकत्ता) का रचना सम्मान मिल चुके हैं। पत्थर हमेशा कमजोर लोग फेंकते हैं, वह जिनमें अपनी सुरक्षा का आश्वासन नहीं होता और गुमराह भी हुए होते हैं। देश में आज जिस तरह से हालात हैं उसे अच्छा नहीं कहा जा सकता। धर्मस्थलों को लेकर शोर भी कहीं से उचित नहीं है। यह बातें शनिवार को वरिष्ठ साहित्यकार और व्यास सम्मान से सम्मानित ममता कालिया ने दैनिक जागरण से बातचीत में कहीं।[15]

निष्कर्ष

संस्कृति विमर्श के एक कार्यक्रम में प्रयागराज आयीं वरिष्ठ साहित्यकार ममता कालिया ने कहा कि वह राजनीति नहीं करती हैं और न ही इससे उनका किसी भी रूप में जुड़ाव है। लेकिन जहां तक राजनीतिक बयानबाजी से उपजे हालात का प्रश्न है तो ऐसा लगता है कि दोनों ही तरफ विश्वास की कमी है। कहा कि सुरक्षा बल पर पत्थर फेंकना इस बात का संकेत है कि देश बड़ी मुसीबत की ओर जा रहा है। यह भी कहा कि पत्थरबाजी में युवा वर्ग आगे है। इस बारे में बड़े बुजुर्गों को गंभीरता से विचार करना चाहिए। मन्नू भंडारी हिन्दी की लोकप्रिय कथाकारों में से हैं। नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार के बीच आम आदमी की पीड़ा और दर्द की गहराई को उद्घाटित करने वाले उनके उपन्यास `महाभोज' (१९७९) पर आधारित नाटक अत्यधिक लोकप्रिय हुआ था। इसी प्रकार 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' नामक फिल्म अत्यंत लोकप्रिय हुई थी और उसको १९७४ की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था इसके अतिरिक्त उन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, व्यास सम्मान और उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत।[16]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 7, Issue 9, September 2020

संदर्भ

1) "हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका और कथाकार मन्नू भंडारी का निधन". अमर उजाला.
2) ↑ "लेखिका मन्नू भंडारी का निधन, 'आपका बंटी' और 'महाभोज' जैसी कालजयी रचनाओं ने दिलाई थी पहचान". आज तक.
3) ↑ मन्नू भंडारी (1994). Dasa pratinidhi kahāniyāṁ. Kitabghar Prakashan. पपृ॰ 6–. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-7016-214-8.
4) ↑ "नहीं रहीं 'महाभोज' और 'आपका बंटी' लिखने वाली मशहूर लेखिका मन्नू भंडारी, 90 की उम्र में निधन". नवभारत टाइम्स.
5) ↑ Singh, R.S. (1973). "Mannu Bhandari". Indian Literature. 16 (1/2): 133–142. JSTOR 24157435.
6) ↑ "मन्नू भंडारी". अभिव्यक्ति. मूल से 3 फ़रवरी 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २३ दिसंबर २००९.
7) "साहित्यकार ममता कालिया को व्यास सम्मान". मूल से 19 अक्तूबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 अक्तूबर 2018.
8) ↑ "Hindi writer Mamta Kalia to get the 27th Vyas Samman". मूल से 9 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 दिसंबर 2017.
9) ↑ "कहानीकार ममता कालिया को लमही सम्मान". नवभारत टाइम्स. 28 जून 2010. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
10) ↑ "समालोचना में समाचार". मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 2014.
11) ↑ हिन्दी भाषा की लेखिका ममता कालिया को द्वितीय सीता पुरस्कार Archived 2014-03-15 at the Wayback Machineजागरण जोश (हिन्दी)
12) ममता कालिया , एक पत्नी के नोट्स , पृ॰ 39
13) संपादक योगेन्द्र दत्त शर्मा , आजकल (पत्रिका) , मार्च 2008 पृ॰ 19
14) ममता कालिया , नरक दर नरक , पृ॰ 69
15) ममता कालिया एक अदद औरत (ममता कालिया की कहानियों खण्ड - 1), पृ॰ 208
16) ममता कालिया , उसका यौवन (ममता कालिया की कहानियाँ , खण्ड - 1), पृ॰ 392